Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में कृषि विकास की आधारभूत संरचना (फसल में नियोजन का अध्ययन)

डॉ. भावना भटनागर*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) पी.एम.सी.ओ.ई., शासकीय स्नानतकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश भारत का एक प्रमुख कृषि राज्य है और यहाँ की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि न केवल राज्य के लोगों को भोजन उपलब्ध कराती है, बल्कि यह रोजगार का एक प्रमुख स्रोत भी है। इस कारण से कृषि को राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। कृषि विकास के विभिन्न प्रयासों के माध्यम से ही विश्व के विकसित राष्ट्र आज आर्थिक विकास के शिखर पर पहुँच चुके हैं। इंग्लैंड, जर्मनी, रूस और जापान जैसे देशों के विकास में कृषि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और तीव्र औद्योगिकीकरण के लिए आवश्यक आधार प्रदान किया।

मध्य प्रदेश में कृषि का इतिहास कोई नया इतिहास नहीं है बल्कि यह एक प्राचीन व्यवसाय है। भारतीय समाज में कृषि को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। कृषि विकास के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. बी.सी. सिंह ने कहा कि 'सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि विकास पहले होना चाहिए और यदि किसी क्षेत्र के विकसित होने से दूसरे क्षेत्र के आर्थिक विकास में बाधा आती है तो वह विकसित क्षेत्र कृषि ही होगा जो अन्य क्षेत्रों के विकास को बाधित करेगा।' इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कृषि का प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि कोई भी राष्ट्र खाद्य पदार्थों में आत्मनिर्भरता प्राप्त किए बिना आर्थिक विकास की कल्पना भी नहीं कर सकता।

मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह राज्य की बढ़ती हुई जनसंख्या को पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध कराती है। औद्योगिक क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योगों को कृषि से ही कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता है जैसे कि सूती वस्त्र, चीनी, चाय, कॉफी, जूट, लकड़ी, वनस्पति घी, तेल आदि उद्योग कच्चे माल के लिए मुख्यत: कृषि पर ही निर्भर होते हैं। साथ ही अन्य लघु उद्योगों को भी कृषि द्धारा ही कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता है।

कृषि विकास के माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है। कृषि विकास का उद्देश्य है कि कृषि आधारित वस्तुओं का अधिक उत्पादन, अधिक आय, अधिक रोजगार और किसानों के लिए बेहतर जीवन स्तर। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि कृषि विकास ही आर्थिक विकास की कुंजी है और यदि राष्ट्र इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहता है तो स्वाभाविक है कि उस देश का आर्थिक विकास प्रभावित होगा और उसकी समस्त विकास प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाएगी।

शब्द कुंजी – कृषि, मध्य प्रदेश, अर्थव्यवस्था, रोजगार, विकास।

फसल नियोजन– म.प्र. एक बड़ा राज्य है। जहाँ किसान ऋणग्रस्त एवं दरिद्र है जिनके पास बहुत छोटे-छोटे कृषि भू-खण्ड है। अत: आर्थिक प्रेरणाओं के फलस्वरूप इनके फसली ढाँचे को परिवर्तित किया जाता है लेकिन अध्ययन के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि अभी भी सीमांत कृषक व्यवस्थित रूप से कृषि कार्य करने में असमर्थ है क्योंकि इसके पीछे मूल कारण प्रथम तो भू-खण्ड का आकार छोटा होना है द्धितीय किसान के पास पूँजी के अभाव में निवेश की क्षमता नहीं है तृतीय इनके पास तकनीकि ज्ञान का पर्याप्त अभाव है। इसकी वजह से कृषक व्यवस्थित रूप में कृषि कार्य संपन्न नहीं कर पाते।

वर्तमान युग में फसल नियोजन आधुनिक कृषि का एक महत्वपूर्ण अंग है।तथा स्वस्थ एवं कुशल कृषि व्यवस्था की दृष्टि से यह आवश्यक भी है क्योंकि नियोजन के अभाव में देश के आर्थिक संसाधनों का न तो कुशलतम् उपयोग हो पाता है और न ही उत्पादकता में वृद्धि होती है। अत: फसल नियोजन राज्य की कुशल कृषि व्यवस्था के लिए आवश्यक है। सामान्यता फसल नियोजन के अन्तर्गत कृषि क्षेत्र में कुछ आवश्यक कदम उठाए जाते है। जिनसे प्रथम तो भूमि का सही उपयोग होता है और दूसरे कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होती है जिससे कृषकों को आय में वृद्धि होती है। सामान्यता इसके विभिन्न रूप है जो निम्न प्रकार है

(1) फसलों के परिवर्तन का स्वरूप:– फसल नियोजन के अन्तर्गत सबसे प्रथम यह कार्य किया जाता है कि प्रतिवर्ष भूमि के टुकड़े पर फसलों का परिवर्तन किया जाए जिससे मिट्टी की उर्वरता दीर्घकाल तक बनी रहती है और भूमि को पड़ती रूप में छोड़ने की संभावनाएँ कम हो जाती है, साथ ही फसलों के परिवर्तन से नवीन फसल के पौधों में रोग और महामारियों पर नियंत्रण रखने में सहायता मिलती है।

अत: फसल नियोजन की दृष्टि से प्रतिवर्ष नहीं तो कम से कम तीन वर्ष में फसलों में परिवर्तन करना आवश्यक है।

(2) मिश्रित फसल पद्धति का अपनाना:– फसल नियोजन के अन्तर्गत दूसरा कदम यह उठाया जाता है कि कृषि भूमि पर एक ही वक्त में एक ही खेत

में एक से अधिक फसलें बोई जाती हैं यह पद्धति तब अधिक उपयोगी होती है जबकि एक फसल तो अधिक गहरी जड़ों वाली हो और उसके पौधे एक दूसरे से काफी दूरी पर लगाए जाएं तथा दूसरी फसल छोटे पौधों वाली हो जिन्हे कि पहली फसल के दो पौधों के बीच लगाया जाए। इस प्रकार एक ही खेत में एक ही समय में दो फसलों का एक साथ बोना मिश्रित फसल पद्धति कहलाती है। इसका लाभ यह होता है कि प्रथम तो यह दोनों फसले अच्छा उत्पादन देगी और यदि किसी कारणवश एक फसल नष्ट होती है तो दूसरी फसल कम से कम किसान की लागत निकालने में मदद करेगी।

(3) फसलों का वितरण:- फसल नियोजन के अन्तर्गत तीसरा कदम यह उठाया जाता है कि किसान के पास उपलब्ध भूमि में प्रथम तो कौन सी फसलें कौन से क्षेत्र में उगाई जाएँ तथा कितने क्षेत्र में वास्तव में फसल बोई जाए। यही स्थिति जब प्रदेश स्तर पर लगा की जाती है। तो इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किस क्षेत्र में कौन सी फसल का उत्पादन किया जाए तथा उस क्षेत्र में कितनी कृषि भूमि पर यह फसल बोई जाए। इसका एक लाभ यह होता है कि उस क्षेत्र में फसल से संबंधित मिट्टी परीक्षण कर फसल को बोया जाता है। जिससे उत्पादन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है और कृषक को विशिष्टीकरण के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में आय प्राप्त होती है।

फसल नियोजन की आवश्यकता:- म.प्र. एक कृषि प्रधान राज्य है तथा कृषि म.प्र. के निवासियों के जीवन का मूल आधार भी है, इसलिए यह आवश्यक है कि प्रदेश में फसल नियोजन को प्राथमिकता के आधार पर अपनाया जाए। फसल नियोजन के अपनाने से प्रदेश की कृषि एवं अर्थव्यवस्था दोनों को ही पर्याप्त लाभ प्राप्त होगें। म.प्र. में फसल नियोजन के लिए व्यापक संभावनाऐं है। लेकिन पिछड़ेपन के कारण इसको अपनाने के अवसर बहुत कम दृष्टिगोचर होते है। जबकि फसल नियोजन आर्थिक समृद्धि को दृष्टि से आवश्यक है। अत: म.प्र. में इसको अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है और इसको अपनाने के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते है वे निम्न प्रकार हैं।

(1) गहन एवं सूक्ष्म अनुसंधान:- फसल नियोजन एक गतिशील प्रक्रिया है अत: इसको अपनाने के लिए बहुत गठन अनुसंधान करना आवश्यक है और इसके लिए वैज्ञानिकों को विशेष कार्य करने होगें। जिसमें सर्वप्रथम इस बात को प्राथमिकता के आधार पर देखना होगा कि राज्य के किन क्षेत्रों के लिए कौन सी फसल उपयुक्त है। इस दृष्टि से कृषि वैज्ञानिकों को अनुसंधान के माध्यमों से फसलों के क्रम में परिवर्तन करना होगा। द्वितीय फसल नियोजन के लिए यह भी आवश्यक है। कि कृषि वैज्ञानिकों को विभिन्न फसलों की ऐसी किस्मों का विकास करना होगा जो कि जलवायु की विषमताओं को सहन कर ले और अधिक उत्पादन भी दे सके। तृतीय कृषि वैज्ञानिकों को प्रदेश स्तर पर ऐसी फसलों का विकास करना होगा जो कि प्रदेश में उपलब्ध विभिन्न मिट्यिों के अनुकूल हो क्योंकि प्रदेश में आज भी ऐसी फसलें बोई जाती है जो मिट्टी के अनुकूल नहीं होती हे। परिणामस्वरूप न तो भूमि का सही उपयोग होता है और नही उचित मात्रा में उत्पादन प्राप्त होता है। जिससे प्रदेश की कृषि व्यवस्था आज भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई है। साथ प्रदेश में अभी भी फसलों की पोषण आवश्यकताओं की सही जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है। जिसके कारण फसलें विभिन्न बीमारियों का शिकार होती है। अत: यह आवश्यक है कि फसलों की पोषण आवश्यकताओं का ठीक-ठीक पता लगाया जाए और विभिन्न फसलों के रोगों, महामारियों का पता लगाया जाए तथा मिट्टी द्वारा छोड़े गये नाइट्रोजन तत्वों का फसलों पर क्या विपरीत प्रभाव पड़ा है इसकी भी जानकारी प्राप्त की जाए। यह कृषि वैज्ञानिकों के अध्ययन का विषय है जो फसल नियोजन के लिए आवश्यक है। और यह सब जानकारियाँ गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन द्वारा ही संभव है।

(2) फसलीय ढाँचे का अध्ययन:- म.प्र. में फसल नियोजन जैसी कोई नीति अभी तक प्राथमिकता क्रम पर लागू नहीं हैं जिसके कारण खादय एवं व्यापारिक फसलों के बीच कोई व्यवस्थित प्रक्रिया नहीं अपनाई जाती है। अत: सरकार को कृषि वैज्ञानिकों के माध्यमों से यह अनुसंधान कराना होगा कि प्रदेश में व्यापारिक एवं खाद्य फसलों के मध्य वितरण की व्यवस्था क्या है तथा कृषकों की कीमतों तथा लगान प्रेरणाओं के प्रति क्या प्रतिक्रिया है, और यह फसल नियोजन के लिए आवश्यक भी है।

(3) कृषकों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करना:- म.प्र. में कृषि एवं कृषकों के पिछड़ेपन का मूल कारण कृषि के प्रति अप्रशिक्षित होना है। इस दृष्टि से वे फसल नियोजन के प्रति अनभिज्ञ है। अत: यह आवश्यक है कि राज्य सरकार ऐसी व्यवस्था करे जिससे कृषकों को कृषि अनुसंधान के परिणामों की सूचना प्रभावशाली ढंग से दी जा सके तथा उन्हें नई कृषि तकनीकि अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके। इससे किसानों में एक नवीन जागरूकता उभर कर आयेगी और वे फसल नियोजन के प्रति पूर्ण रूप से प्रेरित होंगे।

(4) वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना:- फसल नियोजन की आवश्यकता को देखते हुए यह आवश्यक है कि कृषक नवीन कृषि तकनीकि को अपनाए। ऐसी स्थिति में कृषकों को नवीन तकनीकि अपनाने पर कृषि क्षेत्र में अतिरिक्त निवेश का बोझ उठाना पड़ेगा। अत: उन्हें इस बोझ को उठाने के लिए राज्य सरकार को वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करानी होगी, इसके लिए सरकार प्रयोग की दृष्टि से फार्म प्रदर्शन करने होंगे साथ ही कृषि क्षेत्र में प्रचलित नवीन तकनीकों के प्रभाव का क्रियात्मक प्रदर्शन करना भी आवश्यक है जिससे कृषकों को उचित एवं प्रभावी मार्गदर्शन दिया जा सके। परिणामस्वरूप किसान वित्तीय सहायता व नवीन तकनीकि को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

(5) प्रेरणास्पद योजनाएँ लागू करना:- फसल नियोजन के यह आवश्यक है कि विभिन्न फसलों के बीच उचित संतुलन स्थापित किया जाये और इसके लिए आवश्यक है कि सरकार को प्रेरणादायक योजनाएँ लागू करना होगी। ऐसी दशा में सरकार इन योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए उचित किस्म के बीजों एवं रासायनिक खादों को सस्ती दर पर कृषकों को उपलब्ध कराए तथा जो किसान इन योजनाओं के अनुरूप उत्पादन करके अधिक फसल देते है। उन्हें राज्य स्तर पर सरकार पुरस्कृत करें।

ऐसी दशा में कृषकों को प्रोत्साहन प्राप्त होगा और वे सरकारी योजनाओं के प्रति विशेष रूप से जागरूक होंगे। जिससे फसल नियोजन को अपनाने में सफलता प्राप्त होगी।

उक्त अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि म.प्र. में फसल नियोजन की मूलभूत आवश्यकता है, और यह तभी संभव है जब सरकार और किसान मिलकर इस दिशा में प्रयास करें कृषक इस कार्यक्रम में जागरूक हों और नवीन तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित हो तथा सरकार किसानों को फसल नियोजन के प्रति प्रेरित करने के लिए बीज, खाद, पानी आदि रियायती दरों पर उपलब्ध कराए तथा फसलों के उत्पादन में करों की छूट तथा वित्तीय

सहायता उपलब्ध कराए तभी उत्पादन वृद्धि संभव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. म.प्र. एक भौगौलिक अध्ययन डॉ. प्रमिला कुमार, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
2. कृषि अर्थशास्त्र डॉ. जय प्रकाश मिश्र, साहित्य भव पब्लिकेशन, आगरा
3. भारतीय कृषि का अर्थ तंत्र डॉ. एन.एल. अग्रवाल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
4. कृषि विकास की समस्याएं श्री कृष्ण कुमार उमाहिया, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5. भारतीय अर्थशास्त्र डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. एस.सी. जैन साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
6. भारतीय अर्थ व्यवस्था श्री मिश्र पुरी हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई
7. कृषि अभियंत्रण प्रो. श्री रंधावा चौहान, रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
8. कृषि अर्थशास्त्र के सिद्धांत प्रो. श्री के.एन. सहाय, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
9. कृषि अर्थशास्त्र श्री एस.सी. मित्ताल, ऑरिएन्टल पब्लिशिंग हाउस, आगरा
10. संख्यिकी के मूल तत्व डॉ. श्री के.एन. नागर, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
11. सांख्यिकी डॉ. श्री बी.एन. गुप्ता, साहित्य भवन, आगरा
12. अर्थशास्त्र डॉ. श्री वी.सी. सिन्हा, साहित्य भवन पब्लिशर्स, आगरा
13. कृषक जगत डॉ. साधन गंगराडे, कृषक जगत भवन, इन्दिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, एम.पी. नगर, भोपाल
14. रिसर्च मैथ्डोलॉजी डॉ. आर.एन. त्रिवेदी, डॉ. डी.पी. शुक्ला, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
15. रिसर्च मैथ्डोलॉजी डा. बी.एम. जैन, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
16. अनुसंधान प्रतिधियाँ श्री सी.एम. चौधरी, सबलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर
17. समाजिक अनुसंधान राम गोपाल सिंह भारती, मध्य प्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल 179
18. अनुसंधान परिचय पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
19. प्रारंभिक कृषि अभियांत्रिकी डॉ. हरेन्द्र सिंह चौहान, प्रकाशन निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पन्त, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल
20. जिला साख्यिकी पुस्तिका जिला दतिया
21. जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, जिला दतिया-2002
22. वही 2006
23. वही 2007
24. वही 2009
25. रिसर्च लिंक डॉ. रमेश सोनी, डॉ. सत्यम सोनी, वर्धमान अपार्टमेन्ट ओल्ड पलासिया, इन्दौर
26. कुरूक्षेत्र (मासिक पत्रिका) ललिता खुराना ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली 2002-2010
27. योजना (मासिक पत्रिका) 538 योजना भवन संसद मार्ग, नई दिल्ली
28. मध्य प्रदेश कृषि सांख्यिकी कृषि सांख्यिकी संचालनालय, भोपाल 2002 - 2010
29. मध्य प्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, भोपाल
30. म.प्र. की आधारभूत कृषि सांख्यिकी 2002 - 2010
31. समाचार पत्र
1. दैनिक भास्कर, ग्वालियर
2. दैनिक नई दुनिया, ग्वालियर
3. दैनिक जागरण, ग्वालियर
4. दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स
5. दैनिक अमर उजाला
32. उन्नत कृषि यंत्रों पर दी जानेवाली सुविधाएं कृषि अभियांत्रिकी, संचालनालय, म.प्र. भोपाल
33. कृषि यंत्रों का रखरखाव श्री भीमसिंह, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
34. Agricultural Economics Pranav K. Desai, Boitech Books, Delhi 180

****